



सत्य और सुलह आयोग

संदर्भ: न्यायमूर्ति संजय कौल ने जम्मू-कश्मीर में राज्य और गैर-राज्य संस्थाओं द्वारा मानवाधिकारों के कथित उल्लंघन की जांच के लिए एक सत्य और सुलह आयोग (Truth and Reconciliation Commission- TRC) स्थापित करने का सुझाव दिया।

- भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने 2019 में केंद्र सरकार द्वारा अनुच्छेद 370 के निरस्तीकरण पर एकमत से मुहर लगा दी है। इस फैसले के अनुसार अब जम्मू और कश्मीर को भारतीय संघ में विशेष दर्जा प्राप्त नहीं है।

सत्य और सुलह आयोग क्या है?

- सत्य आयोग, जिसे सत्य और सुलह या सत्य और न्याय आयोग के रूप में भी जाना जाता है, एक आधिकारिक निकाय है।
- इसका उद्देश्य अनसुलझे संघर्षों को दूर करने के लिए सरकारी या गैर-राज्य अभिकर्ताओं द्वारा किए गए विगत अनुचित कार्यों को उजागर करना होता है।
- आंतरिक अशांति, गृहयुद्ध या मानवाधिकारों के हनन के साथ तानाशाही से उभरने वाले राज्य सत्य आयोग स्थापित कर सकते हैं।
- सत्य आयोगों के राजनीतिक निहितार्थ होते हैं क्योंकि वे सत्य, सुलह, न्याय, स्मृति, क्षतिपूर्ति और मान्यता जैसे उद्देश्यों को पूरा करते हैं।
- व्यापक परिभाषा के अनुसार, एक सत्य आयोग अतीत की घटनाओं पर केंद्रित होता है और समय के साथ प्रभावित आबादी को संदर्भित करते हुए घटनाओं के एक पैटर्न की जांच करता है। यह अस्थायी होता है और इसकी अंतिम रिपोर्ट के साथ यह विघटित हो जाता है।
- आयोग को समीक्षाधीन राज्य द्वारा आधिकारिक रूप से अधिकृत या सशक्त किया जाता है।
- ऑस्ट्रेलियाई संदर्भ में स्वदेशी लोगों के साथ सुलह के लिए उपयोग किया जाने वाला शब्द "सत्य कथन" (truth telling) है।

कार्य:

- **आधिकारिक सत्य-खोज:** सरकारों द्वारा अधिदेशित सत्य आयोग, "आधिकारिक सत्य-खोज" में संलग्न होते हैं। उनकी भूमिका में राज्य प्रायोजित आतंकवाद, अपराधों और मानवाधिकारों के हनन के इनकार के खिलाफ सबूत प्रदान करना शामिल है।
- **"सत्य का अधिकार":** अधिवक्ता अक्सर "सत्य के अधिकार" पर जोर देते हैं, जिसे सत्य आयोगों को सुविधा प्रदान करने वाला माना जाता है।
- **अंतिम रिपोर्ट और ऐतिहासिक स्पष्टीकरण:** सत्य आयोग अतीत की घटनाओं के आधिकारिक विवरण प्रस्तुत करते हुए अंतिम रिपोर्ट जारी करते हैं। कुछ आयोग विकृत ऐतिहासिक आख्यानों को सही करते हुए "ऐतिहासिक स्पष्टीकरण" पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- **पुनर्स्थापनात्मक न्याय:** संक्रमणकालीन न्याय के तहत, सत्य आयोग आम तौर पर पुनर्स्थापनात्मक न्याय मॉडल का समर्थन करते हैं, जो प्रतिशोध के स्थान पर सुलह को प्राथमिकता देते हैं।
- **प्रतिपूरक न्याय:** प्रतिपूरक न्याय में शामिल वित्तीय प्रतिपूरक, आधिकारिक माफी और स्मारक प्रयास इत्यादि को सत्य आयोगों द्वारा बढ़ावा दिया जाता है।
- **सुलह की महत्वपूर्ण भूमिका:** सुलह सत्य आयोगों का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जिसका उद्देश्य संघर्ष के बाद विखंडित समाजों को बेहतर बनाना है। इनके द्वारा सार्वजनिक सुनवाई पीड़ितों/जीवित बचे लोगों को अपनी व्यथा को साझा करने और कभी-कभी दुर्व्यवहार करने वालों का सामना करने के लिए एक मंच प्रदान करती है।
- **शांतिपूर्ण बस्तियों में एकीकरण:** सत्य आयोगों को विभिन्न देशों में शांतिपूर्ण बस्तियों में एकीकृत किया जाता है, जिससे एकता और सुलह को बढ़ावा मिलता है।

विगत सत्य आयोगों वाले देश:

- दक्षिण अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया और कनाडा अपने महत्वपूर्ण सत्य आयोगों के लिए जाने जाते हैं।
- भारत के पड़ोस में, श्रीलंका और नेपाल में सत्य आयोग स्थापित किए गए हैं।

कनाडाई सत्य और सुलह आयोग (TRC):

- इसने 6,500 से अधिक गवाहों से सुनवाई करते हुए भारतीय आवासीय विद्यालय प्रणाली की विरासत को संबोधित किया।
- छह वर्षों के दौरान, TRC ने दस्तावेज एकत्र किए, जिससे राष्ट्रीय सत्य और सुलह केंद्र में एक ऐतिहासिक रिकॉर्ड बनाया गया।

दक्षिण अफ्रीकी सत्य और सुलह आयोग:

- 1995 में रंगभेद के द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन को उजागर करने के लिए इसे स्थापित किया गया।
- इसमें अभियोजन के बजाय सुलह के लिए पीड़ितों और अपराधियों दोनों से जानकारी एकत्र करने पर ध्यान केंद्रित किया गया।
- इसके द्वारा अक्टूबर 1998 में अपनी रिपोर्ट के पांच खंड जारी किए गए तथा मार्च 2003 में इसके द्वारा दो अतिरिक्त खंड जारी किए गए।

कार्बन पदचिह्न विषमता

संदर्भ: ऊर्जा, पर्यावरण और जल परिषद (CEEW) का एक अध्ययन विकसित और विकासशील देशों के निवासियों के बीच पर्याप्त कार्बन उत्सर्जन असमानताओं का संकेत देता है।

➤ **कार्बन उत्सर्जन असमानताएँ:**

- विकसित देशों में प्रति व्यक्ति कार्बन उत्सर्जन कुछ विकासशील देशों के सबसे धनी 10% लोगों की तुलना में काफी अधिक है।
- मैक्सिको और दक्षिण अफ्रीका को छोड़कर, विकासशील देशों में शीर्ष 10%, विकसित देशों के निम्न वर्ग में रहने वाले व्यक्तियों के समान ही कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा का योगदान करते हैं।
- भारत, ब्राजील और आसियान क्षेत्र के सबसे गरीब लोगों का कार्बन उत्सर्जन सऊदी अरब, अमेरिका या ऑस्ट्रेलिया के सबसे कम आय वर्ग के लोगों की तुलना में 6 से 15 गुना कम है।

Face to Face Centres

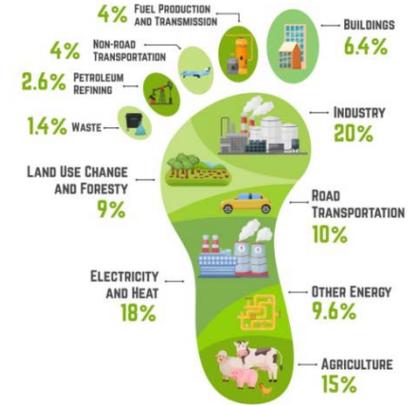




12 December, 2023

- **आय असमानताएं और कार्बन पदचिह्न:** विकसित देशों में शीर्ष 1% एवं शीर्ष 10% आय समूहों का प्रति व्यक्ति कार्बन पदचिह्न काफी अधिक है, जो विकासशील देशों में उनके समकक्षों की तुलना में चार से आठ गुना अधिक है।
- **अध्ययन का दायरा और डेटा स्रोत:**
 - अध्ययन में 14 देशों, यूरोपीय संघ और आसियान क्षेत्र को शामिल किया गया है, जो लगभग 81% वैश्विक उत्सर्जन का प्रतिनिधित्व करते हैं।
 - विभिन्न आय वर्गों में प्रति व्यक्ति CO2 उत्सर्जन का विश्लेषण करने के लिए विश्व असमानता डेटाबेस और विश्व बैंक के डेटा का उपयोग किया गया था।
- **उत्सर्जन विभाजन और तत्काल कार्रवाई:**
 - "उत्सर्जन विभाजन: देशों और आय वर्गों में असमानता" शीर्षक वाली रिपोर्ट से पता चलता है कि विकसित देशों और चीन के सबसे धनी 10% लोग संयुक्त रूप से अध्ययन किए गए सभी विकासशील देशों की तुलना में 22% अधिक CO2 उत्सर्जित करते हैं।
 - संभावित महत्वपूर्ण उत्सर्जन कटौती पर जोर देते हुए, समृद्ध लोगों के बीच निम्न-कार्बन जीवन शैली अपनाने पर बल दिया जाता है।
- **संभावित समाधान:**
 - यदि विकसित देशों और चीन में सबसे अमीर 10% लोग अपने कार्बन पदचिह्न को आधा कर दें, तो सालाना 3.4 बिलियन टन से अधिक CO2 उत्सर्जन कम किया जा सकता है।
 - सबसे धनी 10% लोगों पर प्रस्तावित कार्बन टैक्स \$500 बिलियन की बचत कर सकता है, जो कार्बन-सघन खपत को हतोत्साहित करेगा और जलवायु परिवर्तन शमन, अनुसंधान और विकास का समर्थन करेगा।
- **कार्बन पदचिह्न:**
 - कार्बन पदचिह्न, मानव गतिविधियों के कारण वायुमंडल में उत्पन्न कार्बन डाइऑक्साइड (CO2) और मीथेन सहित कुल ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन का प्रतिनिधित्व करता है।
 - इसे व्यक्तियों, संगठनों, उत्पादों, घटनाओं आदि से संदर्भित किया जा सकता है।
 - विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार, कार्बन पदचिह्न जीवाश्म ईंधन जलाने से CO2 उत्पादन पर गतिविधियों के प्रभाव को मापता है।
 - **पारिस्थितिक पदचिह्न से संबंध:** कार्बन पदचिह्न पारिस्थितिक पदचिह्न का एक उपसमूह है, जो विशेष रूप से जीवाश्म ईंधन जलाने से होने वाले ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को संबोधित करता है। इसके विपरीत, पारिस्थितिक पदचिह्न मानव आबादी द्वारा उपभोग किए जाने वाले संसाधनों के पुनरुत्पादन और उससे उत्पन्न अपशिष्ट के अवशोषण और उसे हानिरहित बनाकर लौटाने के लिए ज़रूरी, जैविक उत्पादक भूमि और समुद्री क्षेत्र की मात्रा को दर्शाता है।
 - **क्योटो प्रोटोकॉल के तहत कार्बन पदचिह्न में मान्यता प्राप्त छह GHG:**
 - कार्बन डाइऑक्साइड (CO2)
 - मीथेन (CH4)
 - नाइट्रस ऑक्साइड (N2O)
 - हाइड्रोफ्लोरोकार्बन (HFC)
 - परफ्लूरोकार्बन (PFC)
 - सल्फर हेक्साफ्लोराइड (SF6)
 - **मापन:**
 - कार्बन फुटप्रिंट को आम तौर पर एक वर्ष में CO2 (CO2e) के समतुल्य टन में मापा जाता है।
 - CO2e की गणना प्रत्येक GHG के उत्सर्जन को उसकी 100-वर्षीय ग्लोबल वार्मिंग क्षमता (GWP) से गुणा करके की जाती है।
 - **ऊर्जा उत्पादन प्रभाव:** ऊर्जा उत्पादन के संदर्भ में कोयले में सबसे ज्यादा कार्बन पदचिह्न होता है, इसके बाद तेल, प्राकृतिक गैस और भूतापीय ऊर्जा का स्थान आता है।
 - **कार्बन फुटप्रिंट के प्रकार:**
 - **संगठनात्मक:** ऊर्जा उपयोग, औद्योगिक प्रक्रियाओं और कंपनी वाहनों सहित एक संगठन के भीतर सभी गतिविधियों से उत्सर्जन शामिल है।
 - **उत्पाद:** कच्चे माल के निष्कर्षण और विनिर्माण से लेकर उपयोग, पुनः उपयोग, पुनर्चक्रण या निपटान तक के उत्सर्जन को शामिल किया जाता है, जो किसी उत्पाद या सेवा के पूरे जीवन चक्र को शामिल करता है।

CARBON FOOTPRINT



'अमृत' (Arsenic and Metal Removal by Indian Technology-AMRIT)

संदर्भ: केन्द्रीय जल शक्ति मंत्रालय के मंत्री ने राज्यसभा में अमृत का उल्लेख किया था।

- आईआईटी-मद्रास द्वारा विकसित, 'अमृत' पानी की गुणवत्ता के मुद्दों, विशेष रूप से आर्सेनिक और धातु आयन हटाने को संबोधित करता है।
- **नैनो-स्केल आयरन ऑक्सी-हाइड्रॉक्साइड:** यह तकनीक नैनो-स्केल आयरन ऑक्सी-हाइड्रॉक्साइड को नियोजित करती है। जब पानी इसके माध्यम से गुजरता है तो आर्सेनिक को हटा देता है।
- **उपयोगिता:** 'अमृत' को घरेलू और सामुदायिक स्तर पर जल शोधन के लिए डिज़ाइन किया गया है।

Face to Face Centres





➤ जल जीवन मिशन:

- **उद्देश्य:** मिशन का उद्देश्य वर्ष 2024 तक भारत के प्रत्येक ग्रामीण घर में सुरक्षित नल का पानी उपलब्ध कराना है।
- **दृष्टिकोण:** यह एक समुदाय-आधारित दृष्टिकोण का अनुसरण करता है, जिसमें मिशन के प्रमुख घटकों के रूप में सूचना, शिक्षा और संचार पर जोर दिया जाता है।
- **नोडल मंत्रालय:** जल शक्ति मंत्रालय के तहत पेयजल और स्वच्छता विभाग
- **रणनीति:**
 - मिशन स्थानीय स्तर पर एकीकृत मांग और आपूर्ति पक्ष के जल प्रबंधन पर केंद्रित है।
 - वर्षा जल संचयन और भूजल पुनर्भरण सहित स्रोत स्थिरता के लिए बुनियादी ढांचे का विकास एक प्रमुख पहलू है।
 - कृषि में पुनः उपयोग के लिए घरेलू अपशिष्ट जल का प्रबंधन भी रणनीति का हिस्सा है।
- **अभिसरण:** मिशन देश भर में स्थायी जल आपूर्ति प्रबंधन प्राप्त करने के लिए अन्य केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं के साथ अपने प्रयासों को संरेखित करता है।
- **वित्तीयन:**
 - वित्तीयन केंद्र और राज्य सरकारों के बीच 50:50 के अनुपात में साझा किया जाता है।
 - हिमालयी और पूर्वोत्तर राज्यों को 90:10 के वित्त पोषण पैटर्न से लाभ होता है।
 - केंद्र शासित प्रदेशों को केंद्र सरकार से 100% वित्तीयन मिलता है।

➤ आर्सेनिक विषाक्तता:

- आर्सेनिक, एक विषाक्त तत्व के रूप में दूषित पानी और भोजन के माध्यम से शरीर में प्रवेश करता है।
- पीने के पानी और भोजन में आर्सेनिक के बढ़े हुए स्तर के परिणामस्वरूप **आर्सेनिकोसिस** हो सकता है, जो गंभीर स्वास्थ्य बीमारी है।
- आर्सेनिकोसिस आवश्यक एंजाइमों को नुकसान पहुंचाता है, जिससे कई अंग प्रणालियों में शिथिलता आती है और अंततः मृत्यु हो जाती है।
- मुख्य रूप से पीने के पानी और भोजन के माध्यम से आर्सेनिक की संपर्कता, कैंसर, त्वचा की क्षति, हृदय रोग और मधुमेह सहित विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं को बढ़ावा देती है।
- गर्भावस्था और प्रारंभिक बचपन के दौरान आर्सेनिक संज्ञानात्मक विकास में हानि और युवा वयस्कों की मृत्यु दर में वृद्धि का कारण बनता है।
- विभिन्न आयु समूहों में सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए आर्सेनिक संदूषण को संबोधित करना महत्वपूर्ण है।

विशेषता	मात्रा
परमाणु संख्या	33
परमाणु भार	74.9216 ग्राम मोल ⁻¹
पॉलिंग के अनुसार वैद्युतीयऋणात्मकता	2.0
घनत्व	14°C पर 5.7 ग्राम सेमी ⁻³
गलनांक	814° सेल्सियस (36 एटीएम)
क्वथनांक	615°C (ऊर्ध्वपातन)
वैंडरवाल्स त्रिज्या	0.139 nm
आयनिक त्रिज्या	0.222 nm(-2) 0.047 nm (+5) 0.058 (+3)
आइसोटोप	8
इलेक्ट्रॉनिक आवरण	[Ar] 3d10 4s2 4p3
प्रथम आयनीकरण की ऊर्जा	947 kJ. mol ⁻¹
द्वितीय आयनीकरण की ऊर्जा	1798 kJ. mol ⁻¹
तृतीय आयनीकरण की ऊर्जा	2736 kJ. mol ⁻¹
मानक क्षमता	- 0.3 V (As3+/ As)

NEWS IN BETWEEN THE LINES

नवेगांव नागझिरा बाघ अभ्यारण्य



हाल ही में, रेडियो कॉलर से प्राप्त डेटा से पता चलता है कि महाराष्ट्र के नवेगांव नागझिरा बाघ अभ्यारण्य में स्थानांतरित की गई दो बाघिनों कम घनत्व वाले क्षेत्रों में वास कर रही हैं।

नवेगांव नागझिरा बाघ अभ्यारण्य के बारे में:

- नवेगांव-नागझिरा बाघ अभ्यारण्य (NNTR) महाराष्ट्र के गोंदिया और शंदारा जिलों में स्थित है।
- यह महाराष्ट्र का पांचवां बाघ अभ्यारण्य है।
- इसे 1970 में वन्यजीव अभ्यारण्य घोषित किया गया था।
- इसे 12 दिसंबर, 2013 को भारत के 46वें बाघ अभ्यारण्य के रूप में अधिसूचित किया गया था।
- यह मध्य भारत के प्रमुख बाघ अभ्यारण्यों से जुड़ा हुआ है, जिनमें मध्य प्रदेश में कान्हा और पेंच, महाराष्ट्र में पेंच और ताडोबा-अंधेरी, छत्तीसगढ़ में इंद्रावती, और तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में कवाल और नागार्जुनसागर शामिल हैं।
- **वनस्पति:** इस अभ्यारण्य में विभिन्न प्रकार के पौधे पाए जाते हैं, जिनमें प्रमुख रूप से सागौन, तेंदू, ऐन, बांस, अर्जुन और हलदू शामिल हैं।
- **जीव:** इसमें विभिन्न प्रकार के वन्यजीव निवास करते हैं, जिनमें बाघ, तेंदुए, सिवेट, भेड़िये, स्लोथ भालू, विशाल उड़ने वाली गिलहरी, गौर और पेंगोलिन आदि शामिल हैं।

Face to Face Centres





<h3>कोया जनजाति</h3> 	<p>हाल ही में, कोया जनजाति ने भारतीय बाइसन के संरक्षण के लिए अपनी पारंपरिक बांसुरी, परमकोर में बैस के सींग के उपयोग को पर्यावरण के अनुकूल ताड़ के पत्तों से प्रतिस्थापित कर दिया है।</p> <p>कोया जनजाति के बारे में:</p> <ul style="list-style-type: none"> कोया जनजाति एक भारतीय आदिवासी समुदाय है जो तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, ओडिशा और छत्तीसगढ़ राज्यों में पाई जाती है। वे मुख्य रूप से स्थानीय किसान और कारीगर हैं। वे मुख्य रूप से अपनी मातृभाषा के रूप में गोंडी (एक द्रविड़ भाषा) बोलते हैं साथ ही ओडिया और तेलुगु भाषाओं में भी बातचीत करते हैं। मेदाराम जतारा (Medaram Jatara) तेलंगाना की कोया जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला एक त्योहार है। यह त्योहार हर दो साल में माघ (फरवरी) के महीने में पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है। वे त्योहारों और शादियों के दौरान पर्माकोक अटा (बाइसन हॉर्न नृत्य) नामक नृत्य करते हैं। वे अपने स्वयं के जातीय धर्म का पालन करते हैं, लेकिन हिंदू देवी-देवताओं की भी पूजा करते हैं।
<h3>ममीकृत बबून</h3> 	<p>हाल ही में, मिस्र में खोजी गई विदेशी लाल क्वार्टजाइट से बनी ममीकृत बबूनों की मूर्ति ने शोधकर्ताओं को उनकी उत्पत्ति के बारे में प्रास सूचना ने आश्चर्यचकित कर दिया है।</p> <p>ममीकृत बबून के बारे में:</p> <ul style="list-style-type: none"> 1905 में, मिस्र के विज्ञानी लुईस लोट्ट और क्लाउड गेलाई ने गम्बानत अल-कुरुद, में ममीकृत बबूनों की खोज की थी जिसे "बंदरों की घाटी" के नाम से भी जाना जाता है। वैज्ञानिकों ने ममीकृत बबूनों की उत्पत्ति का पता लगाने के लिए माइटोकॉन्ड्रियल डीएनए (mt DNA) का उपयोग किया। शोध से पता चलता है की बबून मिस्र के स्थानिक नहीं थे, फिर भी वे मिस्र में पाए जाते थे। संभवतः ऑलिव बबून दक्षिण (अब सूडान) से लाए गए थे, जबकि हमाड्रियास बबून लाल सागर के किनारे पहाड़ी क्षेत्रों से लाए गए थे। मिस्र के देवता थोथ को एक बबून द्वारा दर्शाया गया था, जो विचित्र है क्योंकि बबून मिस्र के स्थानिक नहीं हैं।
<h3>डाउन सिंड्रोम</h3> 	<p>हाल ही में एक घटना सामने आई है जिसमें दिल्ली में अपने घर में घुसे दो लुटेरों को खिलौने की बंदूक दिखाकर एक 21 वर्षीय डाउन सिंड्रोम पीड़ित युवक ने डकैती के प्रयास को नाकाम कर दिया।</p> <p>डाउन सिंड्रोम के बारे में:</p> <ul style="list-style-type: none"> डाउन सिंड्रोम एक आनुवंशिक विकार है जो शारीरिक और मानसिक अक्षमताओं का कारण बनता है। यह तब होता है जब किसी व्यक्ति में गुणसूत्र 21 की एक अतिरिक्त प्रतिलिपि जुड़ी होती है। यह अतिरिक्त आनुवंशिक सामग्री बच्चे के शरीर और मस्तिष्क के विकास को प्रभावित करती है। यह मानसिक मंदता, संज्ञानात्मक अक्षमता , झुकी हुई आंखें, आंख के ऊपर त्वचा की एक तह तथा हृदय संबंधी कमजोरियों जैसे लक्षणों के साथ प्रकट होता है। डाउन सिंड्रोम तीन रूपों में पाया जाता है: ट्राइसॉमी 21 (95%), ट्रांसलोकेशन डाउन सिंड्रोम (3%) और मोजेक डाउन सिंड्रोम (2%)। डाउन सिंड्रोम का कोई इलाज नहीं है। हालांकि, भौतिक चिकित्सा, स्पीच थेरपी और प्रारंभिक हस्तक्षेप तथा विशेष शिक्षा आदि इस सिंड्रोम के प्रभाव को कम करने में मदद कर सकते हैं।
<h3>समाचारों में स्थान</h3> <h3>दक्षिण कोरिया</h3>	<p>हाल ही में, एक अमेरिकी F-16 फाइटर जेट "इन-फ्लाइट इमरजेंसी" (उड़ान के दौरान आपात स्थिति) का सामना करने के बाद एक नियमित प्रशिक्षण अभ्यास के दौरान दक्षिण कोरिया में दुर्घटनाग्रस्त हो गया।</p> <p>दक्षिण कोरिया (राजधानी: सियोल)</p> <p>अवस्थिति : दक्षिण कोरिया पूर्वी एशिया में, कोरियाई प्रायद्वीप के दक्षिणी भाग में अवस्थित है।</p> <p>भौगोलिक सीमाएँ: यह उत्तर में डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया (उत्तर कोरिया), पूर्व में पूर्वी सागर (जापान का सागर), दक्षिण में पूर्वी चीन सागर, पश्चिम में पीला सागर और कोरिया जलडमरूमध्य से सीमाएँ साझा करता है, जो इसे जापान के त्सुशिमा द्वीप से अलग करता है।</p> <p>भौतिक विशेषताएँ:</p> <ul style="list-style-type: none"> हल्लासन (Hallasan) दक्षिण कोरिया की सबसे ऊंची पर्वत चोटी है। ताएबेक पर्वत (Taebaek Mountains) और सोबेक पर्वत (Sobaek Mountains) दोनों ही दक्षिण कोरिया में पर्वत श्रृंखलाएँ हैं। दक्षिण कोरिया में हान नदी (Han River) कोरियाई प्रायद्वीप पर चौथी सबसे लंबी नदी है। 

POINTS TO PONDER

- ❖ पहले द्विवार्षिक भारतीय कला, वास्तुकला और डिजाइन (IAADB) 2023 का आयोजन किस शहर में किया जा रहा है? - नई दिल्ली
- ❖ 'हरितसागर' दिशानिर्देश किस केंद्रीय मंत्रालय द्वारा लॉन्च किए गए थे? - बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय
- ❖ स्टैन्डर्ड एण्ड पूवर (S&P) रैंकिंग के अनुसार, विश्व में सबसे बड़ा बीमाकर्ता कौन है? - जर्मनी की एलियांज एसई
- ❖ इलेक्ट्रॉनिक ओरिजिन डेटा एक्सचेंज सिस्टम (EODES) किन देशों के बीच एक नई डेटा एक्सचेंज प्रणाली है? - भारत और दक्षिण कोरिया
- ❖ अंतर्राष्ट्रीय टेनिस हॉल ऑफ फ़ेम के लिए नामांकन प्राप्त करने वाले पहले एशियाई व्यक्ति कौन बन गए हैं? - लिएंडर पेस

Face to Face Centres

